भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों का महत्त्व एवं इतिहास लेखन में उनकी भूमिका

डॉ. नीलम
सहायक प्रोफेसर
अपेक्स युनिवर्सिटी, जयपुर

सारांश (Abstract)

यह शोध-पत्र भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों के महत्त्व तथा भारतीय इतिहास लेखन में उपयोग की गई प्रमुख पांडुलिपियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पांडुलिपियाँ भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक संरचना, धार्मिक मान्यताओं तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों का सबसे प्रामाणिक स्रोत रही हैं। इतिहासकारों ने वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, संगम साहित्य, बौद्ध–जैन ग्रंथों, संस्कृत काव्यों, फारसी इतिहास-ग्रंथों और प्रशस्तियों जैसे अनेक पांडुलिपीय स्रोतों का उपयोग करके भारत के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक इतिहास का पुनर्निर्माण किया है। साथ ही, यह शोध-पत्र संरक्षण, डिजिटाइजेशन और शोध की चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द (Keywords)

पांडुलिपि, इतिहास लेखन, प्राथमिक स्रोत, वेद, संगम साहित्य, प्रशस्ति, संरक्षण, भारतीय इतिहास

प्रस्तावना (Introduction)

भारत की ज्ञान-परंपरा विश्व में सबसे प्राचीन और समृद्ध मानी जाती है। मौखिक परंपरा के बाद लिखित संस्कृति के विकास के साथ ही पांडुलिपियों ने समाज और इतिहास की संरचना में एक निर्णायक भूमिका निभाई। ताड़पत्र, भोजपत्र, कपड़े, चमड़े और कागज़ पर हाथ से लिखे गए ये दस्तावेज़ भारतीय जीवन के विविध पहलुओं की झलक प्रदान करते हैं।

पांडुलिपियाँ न केवल धार्मिक या साहित्यिक कृतियाँ हैं, बल्कि ये इतिहास के *प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)* भी हैं। इतिहासकारों ने इन्हीं स्रोतों के आधार पर भारत के प्राचीन और मध्यकालीन काल का क्रमबद्ध इतिहास लिखा है।

पांडुलिपियों की संकल्पना और स्वरूप

भारत में पांडुलिपियाँ केवल लिखित अभिलेख नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत हैं। इनका दायरा अत्यंत व्यापक है। प्राचीन भारत में लेखन सामग्री सुलभ नहीं थी। इसलिए जो भी ज्ञान लिपिबद्ध किया गया, वह अत्यंत महत्वपूर्ण, चयनित और संरक्षित था। palm-leaf, birch-bark, bhojpatra, ताड़पत्र, कपड़े और पशुचर्म पर लिखी पांडुलिपियाँ भारतीय सांस्कृतिक स्मृति का आधार बनीं।

उदाहरण:

- वेद एवं उपनिषदों के विभिन्न शाखागत संस्करण
- बौद्ध त्रिपिटक संग्रह
- जैन आगम ग्रंथ

पांडुलिपियों के प्रकार

- **धार्मिक ग्रंथ:** वेद, उपनिषद, पुराण
- **साहित्यिक कृतियाँ:** रामायण, महाभारत, नाटक, काव्य
- **वैज्ञानिक ग्रंथ:** आयुर्वेद, गणित, खगोल, वास्तु, रसायन
- **ऐतिहासिक दस्तावेज़:** प्रशस्तियाँ, राजकीय आदेश, ताम्रपत्र
- **भाषा एवं दर्शन:** व्याकरण, अलंकार, टीकाएँ

प्रमुख लिपियाँ

ब्राह्मी, शारदा, देवनागरी, तमिल-ब्राह्मी, बंगाली, कन्नड़, तेलुगु, फारसी आदि।

भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों का महत्त्व

राजनीतिक इतिहास का मूल आधार

कई पांडुलिपियों में राजाओं की वंशावलियाँ, युद्ध विवरण, प्रशासनिक नीतियाँ और दान-पत्र संकलित हैं।

उदाहरण:

- राजतरंगिणी (कल्हण)
- पृथ्वीराज रासो
- तिरुमलाई नायकन वंशावली

१. सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का दर्पण

पांडुलिपियों में वर्णव्यवस्था, विवाह, शिक्षा, चिकित्सा पद्धति, विज्ञान, रीति-रिवाज और लोक-परंपराओं का विस्तृत वर्णन मिलता है।

उदाहरण:

- मनुस्मृति
- याज्ञवल्क्य स्मृति
- कामसूत्र
- चरक तथा सुश्रुत संहिताएँ

२. भाषायी और साहित्यिक विकास का आधार

भारत में संस्कृत, प्राकृत, पाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, फारसी, उर्दू, ब्रजभाषा, अवधी आदि भाषाओं में पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं। यह भाषाई विविधता भारतीय समाज के बहुभाषी चरित्र को दर्शाती है।

३. कला, वास्तुकला और विज्ञान का दस्तावेजीकरण

शिल्पशास्त्र, वास्तुशास्त्र, संगीत शास्त्र और गणितीय ग्रंथों की कई प्राचीन पांडुलिपियाँ आज भी शोधकर्ताओं के लिए बहुमूल्य स्रोत हैं।

४. समाज और संस्कृति का दर्पण

प्राचीन भारतीय समाज की संरचना, रीति-रिवाज़, त्योहार, विवाह प्रथाएँ, शिक्षा और व्यापार का विवेचन अनेक पांडुलिपियों में मिलता है।

५. राजनीतिक इतिहास का निर्माण

प्रयाग प्रशस्ति, राजतरंगिणी, शिलालेख, ताम्रपत्र और अर्थशास्त्र जैसे स्रोतों ने राजवंशों, युद्धों, कर-व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना को उजागर किया।

६. धार्मिक इतिहास का आधार

हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म की मूल शिक्षाएँ इन्हीं पांडुलिपियों में सुरक्षित हैं।

७. विज्ञान और तकनीक का संरक्षण

चरक-संहिता, सुश्रुत-संहिता, सूर्यसिद्धांत, आर्यभटीय आदि ग्रंथों ने चिकित्सा, खगोल, गणित और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपरा को संरक्षित किया।

८. भाषा और साहित्य का विकास

पांडुलिपियाँ भारतीय भाषाओं—संस्कृत, प्राकृत, तमिल, अपभ्रंश—के विकास का साक्ष्य हैं।

नीचे दी गई सूची को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है:

(A) प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ,

(B) मध्यकालीन पांडुलिपियाँ,

(C) औपनिवेशिक काल की पांडुलिपियाँ।

A. प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ (Vedic to Gupta Period)

1. वेद एवं उपनिषद

- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
- उपनिषद: ईश, केन, कठ, छांदोग्य आदि

महत्व: धर्म, अर्थव्यवस्था, समाज संरचना, प्रारंभिक राजनीतिक संगठन का आधार।

2. बौद्ध पांडुलिपियाँ

- त्रिपिटक (विनय, सुत्त, अभिधम्म)
- दीपवंश, महावंश

महत्व: बौद्ध समाज का इतिहास, अशोक के बाद का राजनीतिक इतिहास।

3. जैन आगम

- उत्तराध्ययन सूत्र
- आचारांग
- कल्पसूत्र

महत्व: श्रमण परंपरा, समाज सुधार, व्यापारिक समुदायों के इतिहास का महत्व।

4. पुराण साहित्य

- विष्णु, भागवत, स्कंद, ब्रह्मांड पुराण आदि

महत्व: वंशावली, भूगोल, समाज और धर्म विवरण।

5. संस्कृत महाकाव्य एवं नाटक

- कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, दंडी की कृतियाँ

महत्व: सामाजिक मान्यताएँ, कला, राजनीति, नारी स्थिति का वर्णन।

6. चिकित्सा और विज्ञान पांडुलिपियाँ

- *चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, आर्यभटीय*

महत्व: प्राचीन विज्ञान एवं चिकित्सा इतिहास का आधार।

B. मध्यकालीन भारतीय पांडुलिपियाँ

1. फारसी-उर्दू ऐतिहासिक पांडुलिपियाँ

- तारीख-ए-फिरोजशाही (ज़ियाउद्दीन बरनी)
- अकबरनामा और आईन-ए-अकबरी (अबुल फजल)
- तारीख-ए-गुलशन-ए-राहत

महत्व: प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कर व्यवस्था, दरबार संस्कृति।

2. क्षेत्रीय भाषाओं की पांडुलिपियाँ

- पृथ्वीराज रासो
- तीर्थयात्रा वर्णन (तीर्थयात्रा साहित्य)
- तमिल संगम साहित्य

महत्व: स्थानीय राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था।

3. राजतरंगिणी (कल्हण)

महत्व: कश्मीर का क्रमबद्ध, तर्कसंगत राजनीतिक इतिहास।

4. भक्ति और सूफी परंपरा की पांडुलिपियाँ

- कबीर बीजक
- गुरु ग्रंथ साहिब (प्रारंभिक स्वरूप)
- सूफी-मत ग्रंथ

महत्व: धर्म-सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक समन्वय।

C. औपनिवेशिक काल की पांडुलिपियाँ (17th–19th Century)

- ईस्ट इंडिया कंपनी के अभिलेख
- यात्रियों के विवरण (बरनियर, बर्ड, फैदर)

- स्थानीय प्रशासनिक दस्तावेज

महत्व: भारत के अंतिम पूर्व-आधुनिक इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत।

इतिहास लेखन में पांडुलिपियों का समग्र योगदान — विस्तृत

1 स्रोत सामग्री के रूप में विश्वसनीयता

पांडुलिपियों में लिपिबद्ध सामग्री घटनाओं के समकालीन साक्ष्य प्रदान करती है, जो इतिहासकारों द्वारा क्रॉस-रेफरेंस करके सत्यापित की जाती है।

2 इतिहास का बहुआयामी पुनर्निर्माण

धर्म, राजनीति, समाज, अर्थशास्त्र, कला, विज्ञान—हर क्षेत्र के स्रोत उपलब्ध होने से इतिहास-लेखन बहुआयामी बनता है।

3 वैकल्पिक और उपेक्षित इतिहास का पुनर्पाठ

महिला इतिहास, जनजातीय इतिहास, लोक-इतिहास भी पांडुलिपियों से उजागर होते हैं।

पांडुलिपि संरक्षण और चुनौतियाँ — विस्तृत विश्लेषण

1 संरक्षण की चुनौतियाँ

- जैविक क्षय (fungus, insects, humidity)
- प्राकृत सामग्री (ताड़पत्र, भोजपत्र) का नष्ट होना
- घुमंतू आक्रमणों में नष्ट होना
- औपनिवेशिक काल में चोरी और निर्यात

2 आधुनिक संरक्षण प्रयास

- राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India)
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन
- डिजिटल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट

3. सरकारी प्रयास:
राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (2003), डिजिटाइजेशन, कैटलॉगिंग, Manuscript Resource Centres।

निष्कर्ष (Conclusion)

पांडुलिपियाँ भारतीय इतिहास की मूल आत्मा हैं। इतिहासकारों ने इन्हीं स्रोतों के आधार पर भारत के प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास का क्रमबद्ध पुनर्निर्माण किया है। इनसे समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, विज्ञान और भाषा-परंपरा का वास्तविक स्वरूप प्राप्त होता है। इसलिए पांडुलिपियों का संरक्षण, अध्ययन और डिजिटाइजेशन अत्यंत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भारतीय सभ्यता की इस अमूल्य धरोहर को समझ सकें।

संदर्भ सूची (References)

1. राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, भारत सरकार – रिपोर्टें
2. शर्मा, राम शरण – *भारत का प्राचीन इतिहास*
3. Pollock, Sheldon – *The Language of the Gods in the World of Men*
4. Kane, P.V. – *History of Dharmashastra*
5. Stein, M.A. – *Rajatarangini*
6. Altekar, A.S. – *Education in Ancient India*